आरती श्री सीताराम जी की

गाओ-गाओ री प्रिया -प्रीतम की आरती गाओ ।
आस-पास सखियाँ सुख दैनी टेक ।।
सजि नव साज सिंगार सुनैनी ।
बीन सितार लिए पिकबैनी
गाइ सुराग सुनाओ ।
अनुपम छवि धरि दम्पति राजत
नाल पीत पट भूषन भ्राजत।
निरखत अगनित रति छबि लाजत
नैनन को फल पाओ ।
नीरज नैन चपल चितवन में
सचिर असनिमासुचि अधरन में ।
चंद्रबदन की मधु मुस्कान में
निज नयना अरु झाओ ।
कंचन थार संवारि मनोहर
घृत कपूर सुभ बाति ज्योतिकर ।
मुरछल चंवर लिए रामेश्वर
हरषि सुमन बरसाओ ।

विवरण

हे प्रिय सखियों ! प्रियतम की आरती गाओ । सीता जी की माता सुनैना जी सीता जी को तरह-तरह के नए-नए श्रृंगार कर के सजा रही हैं तथा आस-पास की सखियाँ सुख भरी बातें कर रही हैं । बीन एवं सितार के समान कोयल अपने सुन्दर राग को सुना रही है ।

नीले वर्ण पे पीले वस्त्र एवं आभूषणों से सुसज्जित इस नव दम्पति (सीताराम जी) की शोभा अनुपम छवि बिखेर रही है । इनके लज्जा एवं प्रेम से भरे अनुपम छवि को देखकर हमारे नयनों को शीतलता मिल रही

है । इनकी कमल के समान कोमल आँखें एवं चंचल चित्त तथा इनके सुन्दर होठों की सूर्य की आभा लिए लालिमा मन को अत्यन्त लुभा रही है । इनके चन्द्रमा के समान बदन एवं मधुर मुस्कान से हमारे नयन रीझ रहे हैं ।

मन को हरने वाली,घी कर्पूर एवं शुभ बाती की सोने की आरती की थाल अनुपम ज्योति बिखेर रही है । इन नव दम्पती (सीताराम जी) को मुरछल चँवर डुलाये जा रहे हैं तथा सभी हर्षित मन से इन पर फूलों की वर्षा कर रहे हैं ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.